आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-31, अंक-9-10

सितम्बर-अक्टूबर, 2017

इस अंक में

- डॉ सौम्या स्वामीनाथन – विश्व स्वास्थ्य संगठन की प्रथम भारतीय उपमहानिदेशक 77
- अवसाद : संवाद करना ज़रूरी 78
- पालमपुर में आयोजित मेगा विज्ञान प्रदर्शनी में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी 80
- हिन्दी दिवस के अवसर पर आई सी एम आर मुख्यालय में हिन्दी व्याख्यान का आयोजन 80
- राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान, पुणे द्वारा हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन 82
- विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्योग एक्स्पो में आई सी एम आर की भागीदारी 82
- राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान, नई दिल्ली में हिन्दी दिवस व्याख्यान का आयोजन 83
- आई सी एम आर पुरस्कार वितरण समारोह 84
- वर्ष 2015 एवं वर्ष 2016 के लिए आई सी एम आर के पारितोषिक/पुरस्कार 85
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार 91

संपादक मंडल

अध्यक्ष — **डॉ सौम्या स्वामीनाथन**
सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं
महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान
अनुसंधान परिषद

उपाध्यक्ष — **डॉ संजय एम. मेहेन्दले**
अपर महानिदेशक

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — **डॉ नीरज टण्डन**

संपादक — **डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय**

प्रकाशक — **श्री जगदीश नारायण माथुर**

डॉ सौम्या स्वामीनाथन – विश्व स्वास्थ्य संगठन की प्रथम भारतीय उपमहानिदेशक

डॉ सौम्या स्वामीनाथन, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग की सचिव और भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की महानिदेशक की नियुक्ति जेनेवा स्थित विश्व स्वास्थ्य संगठन में उपमहानिदेशक (प्रोग्राम्स) के पद पर हुई है, संयुक्त राष्ट्र की इस एजेंसी का यह दूसरा उच्चतम पद है। डॉ स्वामीनाथन इस प्रतिष्ठित संगठन के उपमहानिदेशक पद पर सुशोभित होने वाली प्रथम भारतीय आयुर्विज्ञानी वैज्ञानिक हैं।

डॉ स्वामीनाथन, जो एक प्रसिद्ध बालचिकित्साविज्ञानी और चिकित्सा वैज्ञानिक हैं, क्षयरोग पर अपने शोधकार्य के लिए विख्यात हैं। उन्होंने जनवरी, 1992 में आई सी एम आर के चेन्नई स्थित यक्ष्मा अनुसंधान केन्द्र (अब राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान के नाम से ज्ञात) में वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी के पद पर नियुक्त होने के पश्चात विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए मई, 2008 में वैज्ञानिक 'जी' के पद पर कार्य किया। इस दौरान जून, 2009 से जून, 2011 के बीच टी डी आर, डब्ल्यू एच ओ के अंतर्गत उपेक्षित प्राथमिकताओं में अनुसंधान की समन्वयक के रूप में कार्य किया।

डॉ स्वामीनाथन राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्थाओं, समितियों की सदस्य हैं जिनमें प्रमुख हैं : *ऑल पार्टी पार्लियामेंट्री ग्रुप ऑन ग्लोबल ट्यूबरकुलोसिस* (APPG TB) के अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सलाहकार विशेषज्ञ दल की सदस्य; *थर्ड वर्ल्ड ऑर्गनाइज़ेशन ऑफ वीमेन साइंटिस्ट्स* की सदस्य; अंतर्राष्ट्रीय एड्स समिति की सदस्य; *इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स* की आजीवन सदस्य; चेयर, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर इण्डो–ब्राज़ील कार्यकारी दल; सदस्य, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य पर इण्डो–यू एस संयुक्त कार्यकारी दल (आई सी एम आर अंतर्राष्ट्रीय); सदस्य, अंतर्राष्ट्रीय सम्पादकीय बोर्ड, चिकित्सीय संक्रामक रोग; सदस्य, बालकालीन टी बी सबग्रुप, DOTS विस्तार कार्यकारी दल, स्टॉप टी बी पार्टनरशिप; सदस्य, क्षयरोग संचालन समिति, IMPAACT नेटवर्क, एन आई एच, सं रा अ; आदि।

डॉ स्वामीनाथन ने वर्ष 2009 से 2011 के दौरान जेनेवा में उष्णकटिबंधीय रोगों में अनुसंधान और प्रशिक्षण हेतु UNICEF/UNDP/ विश्व बैंक / WHO के विशेष कार्यक्रम के समन्वयक के रूप में भी कार्य किया है । वे विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं विश्व के अनेक सलाहकार निकायों से भी संबद्ध रही हैं। उन्होंने अपना एकेडमिक प्रशिक्षण भारत, संयुक्त गणराज्य (यू के) और संयुक्त राज्य अमरीका में प्राप्त किया तथा *पीयर रिव्यूड जर्नल्स* में 250 से अधिक शोध पत्र और बुक चैप्टर्स प्रकाशित किए हैं।

अगस्त, 2015 से भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की महानिदेशक के रूप में उन्होंने देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित इसके 32 संस्थानों का नेतृत्व किया है और उनकी शोध गतिविधियों को गति प्रदान की है। नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर मुख्यालय में टी बी कंशोर्शियम की स्थापना एक महत्वपूर्ण कदम है। जो देश में व्याप्त क्षयरोग की स्थिति, उसके निवारण एवं नियंत्रण के लिए आयुर्विज्ञान अनुसंधान से जुड़े वैज्ञानिकों के लिए एक मंच के रूप में कार्यरत है। हाल ही में दिनांक 11 अक्टूबर, 2017 को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री ने *'आई सी एम आर स्ट्रेटेजिक प्लान एवं एजेण्डा 2030''* नामक दस्तावेज *(विज़न डॉक्यूमेंट)* का विमोचन किया गया जिसमें आई सी एम आर द्वारा आगामी वर्ष 2030 तक के लिए शोध कार्यक्रमों का निर्धारण किया गया है। इसी कार्यक्रम में आई सी एम आर द्वारा तैयार *'नेशनल गाइडलांइस फॉर स्टेम सेल रिसर्च'* का भी विमोचन किया गया। ये प्रकाशन डॉ स्वामीनाथन के कुशल मार्गदर्शन का ही परिणाम हैं।

डॉ स्वामीनाथन का जेनेवा स्थित विश्व स्वास्थ्य संगठन में उपमहानिदेशक (प्रोग्राम) के पद पर चयन होना आई सी एम आर ही नहीं सम्पूर्ण देश के लिए एक गौरव का विषय है। डॉ स्वामीनाथन इस अत्यंत प्रतिष्ठित पद पर सुशोभित होने वाली प्रथम भारतीय वैज्ञानिक हैं।

अवसाद : संवाद करना ज़रूरी

अवसाद एक ऐसी भयंकर स्थिति है जिससे किसी व्यक्ति के जीवन का प्रत्येक पहलू प्रभावित हो जाता है। इसका असर व्यक्ति के पारस्परिक संबंधों, सामाजिक जीवन, उसके कैरियर और आत्म–सम्मान पर पड़ता है जिससे स्वास्थ्य पर गंभीर परिणाम पड़ते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 'अवसाद' को वर्ष 2017 के विश्व स्वास्थ्य दिवस (7, अप्रैल) को विषय के रूप में घोषित किया था। दिनांक 10 अक्टूबर, 2016 को विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर विश्व स्वास्थ्य दिवस के अभियान के रूप में *''अवसाद': आइये बातें करें''* शीर्षक से स्लोगन को प्रचारित किया गया था।

व्यापकता

वैश्विक रोग भार की रिपोर्ट के अनुसार विश्व में 1.9 प्रतिशत पुरुषों और 3.2 प्रतिशत महिलाओं में एक ध्रुवीय अवसाद *(यूनीपोलर डिप्रेशन)* की व्यापकता है और 5.8 प्रतिशत पुरुषों तथा 9.5 प्रतिशत महिलाओं में इसकी व्यापकता अवधि एक वर्ष देखी गई थी। भारत में 18 वर्ष से अधिक आयु के 5.25 प्रतिशत व्यक्तियों के जीवन काल में अवसाद की व्यापकता देखी गई, तथा वर्तमान में यह व्यापकता 2.68 प्रतिशत है। इससे यह प्रदर्शित होता है कि यदि विगत में 20 वयस्क अवसाद का शिकार रहे थे तो उनमें 10 व्यक्ति आज भी इससे पीड़ित हैं। अनुमान है कि यदि वर्ष 2020 तक जनांकिकीय एवं जानपदिक रोगविज्ञानी स्थितियों में होने वाले परिवर्तन इसी तरह जारी रहते हैं तो अवसाद की व्यापकता बढ़कर कुल रोग का 5.7 प्रतिशत हो जाएगी और यह अरक्तताजन्य हृदय रोग के बाद अशक्तता समंजित जीवन वर्षों के लिए दूसरा बड़ा कारण बन जाएगा।

शहरी दक्षिण भारतीयों की आबादी में सम्पन्न एक बड़े अध्ययन में 15.1 प्रतिशत लोग अवसाद से पीड़ित पाए गए। अवसाद की व्यापकता उच्च आय वर्ग (5.9%) की तुलना में निम्न आय वर्ग में अधिक (19.3%) पाई गई। अवसाद की व्यापकता तलाकशुदा और वैधव्य जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों में क्रमशः 26.5 प्रतिशत और 20 प्रतिशत थी, जबकि हाल में दाम्पत्य सूत्र में बंधे व्यक्तियों में इसकी व्यापकता 15.4 प्रतिशत थी।

रामायण और महाभारत जैसे हमारे धार्मिक ग्रंथों और वीर कथाओं में अवसाद का भली–भांति वर्णन किया गया है। भारत में अवसाद के विकसित होने में धर्म की भी एक विशिष्ट भूमिका होती है। अवसाद ग्रस्त भारतीय रोगियों में बहुधा एक अपराध बोध की स्थिति देखी जाती है। आजकल सोशल मीडिया नेटवर्क के माध्यम से चिकुनगुनिया, स्वाइन फ्लू, डेंगी और अन्य बीमारियों के लक्षणों के विषय में संदेश और चेतावनियां प्रचारित की जाती हैं। हम बातें करते हैं उन महामारियों की जो हमारे शहरों में तबाही मचा देती हैं। हालांकि, जब भी हम अपने आस–पास व्याप्त रोगों के विषय में बातें करते हैं तो पूरे भारत में एक विध्वंसक प्रभाव के साथ व्याप्त 'अवसाद' के जोखिम के विषय में बात करने से रह जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में 36 प्रतिशत लोग अपने जीवन में कभी–न–कभी अवसाद से पीड़ित होते हैं। हम डेंगी और स्वाइन फ्लू पर तो चर्चा करते हैं परन्तु अवसाद विषय पर बात नहीं करना चाहते। यही स्थिति क्षयरोग और कुष्ठरोग के लिए भी बनी रहती है।

इंग्लैण्ड के एक प्रसिद्ध फुटबाल खिलाड़ी स्टैन कॉलीमोर ने वर्णन किया है कि किस प्रकार यह स्थिति किसी व्यक्ति को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती है। गंभीर अवसाद से पीड़ित होने के परिणामस्वरूप उनके कैरियर में तेजी से गिरावट आ गई। एक भारतीय अभिनेत्री सुश्री दीपिका पादुकोण हाल ही में मानसिक बीमारी से उबरने के बाद लोगों में चिन्ता और अवसाद के विषय में अब जागरूकता फैला रही हैं। उन्होंने *'दि लिव लव लॉफ फाउण्डेशन'* नामक एक गैर सरकारी संगठन गठित किया है। वह भारतीय मनश्चिकित्सीय सोसाइटी की *ब्राण्ड एम्बैसडर* भी हैं। इससे लोगों को अवसाद के विषय में आगे आने और खुलकर चर्चा करने में मदद मिलेगी। यह किसी अन्य बीमारी की तरह ही है। यहां इस स्थिति में पारस्परिक बातें करनी सहायक होती हैं।

अवसाद एक बीमारी

लोगों को यह समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि अवसाद कोई कमजोरी नहीं बल्कि एक बीमारी है। आमतौर पर माना जाता है कि अवसाद से आप स्वयं छुटकारा पा सकते हैं। इस तरह की भ्रांतियां पाई जाती हैं क्योंकि अवसाद को बहुधा कलंक की दृष्टि से देखा जाता है। बहुधा यह मान्यता है कि एक व्यक्ति अपने मनोभाव को स्वयं नियंत्रित कर सकता है, और नहीं कर पाने की स्थिति में उसे कमजोर माना जाता है। हालांकि, यह बहुत स्पष्ट किया जाना चाहिए कि लाक्षणिक अवसाद किसी अन्य बीमारी की तरह ही एक बीमारी है। अवसाद से जुड़े कलंक और अनभिज्ञता को कम करने के लिए क्या किया जा सकता है? इसका कोई आसान उत्तर नहीं है, क्योंकि, तीव्र अवसाद ग्रस्त रोगी से लोग बचना चाहते हैं। संभवतः यह जागरूकता फैलाना अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा कि अवसाद की कितनी व्यापकता है। यह एक गंभीर बीमारी होने के बावजूद अभी भी इसका इलाज किया जा सकता है, और उसे रोका जा सकता है। यदि समाज का कोई ऐसा महत्वपूर्ण व्यक्ति इस प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम का हिस्सा बने जो स्वयं अवसाद ग्रस्त हो, तो यह वास्तव में एक अत्यन्त प्रभावी प्रयास होगा। इस प्रकार जागरूकता फैलाने और लोगों को शिक्षित करने की गतिविधियां अभी भी अवसाद से संबंधित कलंक और भ्रांतियों को दूर करने की दिशा में महत्व नहीं दिया गया है। इसलिए, यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि इस विषय में अधिक से अधिक बातें करें।

एक समस्या यह है कि अवसाद से पीड़ित अधिकांश व्यक्तियों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप समय से सहायता बिल्कुल नहीं मिल पाती। इसके अतिरिक्त, अवसाद का इलाज नहीं किए जाने की स्थिति में यह समस्या गंभीर हो जाती है, जिसका दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है और व्यक्ति अपने सुखमय जीवन से वंचित रह जाता है।

लक्षण

अवसाद की उपस्थिति कई तरीकों से हो सकती है। किसी व्यक्ति की सोच को बदलना कठिन होता है। यदि किसी व्यक्ति में निम्नलिखित परिवर्तन देखे जाते हैं तो उसे किसी से इस विषय में चर्चा करनी चाहिएः (i) प्रायः उत्तेजित हो जाता है, क्रोधित हो जाता है, छोटी–छोटी बातों पर अनावश्यक प्रतिक्रिया करता है; (ii) उसके निद्रा व्यवहार में बदलाव, अत्यधिक सोना अथवा रात में नींद नहीं आना; (iii) रोगी बहुत सी बातें भूल जाते हैं, और उनकी एकाग्रता में भारी कमी आना; (iv) अधिकांश समय पर घबराहट और थकान का अनुभव करना; (v) मृत्यु के विषय में सोचना अथवा यह सोचना कि उसकी मृत्यु होने वाली है अथवा आत्महत्या करने पर विचार करना; और (vi) भोजन करने की प्रक्रिया में बदलाव, भूख नहीं लगना अथवा अधिक मात्रा में भोजन करना।

भ्रांतियां

अवसाद से पीड़ित होने का तात्पर्य यह नहीं कि व्यक्ति असमर्थ है, अथवा वह एक असफल व्यक्ति है अथवा वह वास्तव में सामान्य होने की दिशा में प्रयास नहीं कर रहा है, इसका तात्पर्य यह है कि ऐसे व्यक्ति को सहायता की नितान्त आवश्यकता है। अवसाद ग्रस्त अधिकांश व्यक्तियों को मनोचिकित्सा, दवाइयां अथवा इन दोनों रूप में सहायता दी जा सकती है। लघुकालिक मनश्चिकित्सा का तात्पर्य 'बातचीत' के माध्यम से उपचार है जो लाभदायक हो सकता है। गंभीर अथवा अशक्त बनाने वाले अवसाद का इलाज दवाइयों द्वारा भी किया जा सकता है। अधिकांश लोगों में भ्रान्ति होती है कि अवसाद रोधी दवाइयों के सेवन से उसके आदी हो जाते हैं, जो एक चिन्ता का प्रमुख विषय है। यह बिल्कुल एक गलत अवधारणा है और इसे दूर करने की आवश्यकता है।

अवसाद की स्थिति ठीक किसी अन्य सामान्य बीमारी की तरह ही उत्पन्न होती है। कभी–कभी अवसाद की स्थिति उत्पन्न होने के बाद लोग इससे बचने के लिए मादक दवाइयों का सेवन करने लगते हैं। जहां मादक औषधियों का सेवन अथवा मदिरा पान करने की शुरुआत करने के बाद से अवसाद की चपेट में आ जाते हैं। उनमें स्थिति का पूर्वानुमान करना अत्यन्त कठिन हो जाता है। वहीं दूसरी ओर कुछ लोग मादक द्रव्यों और अल्कोहल का सेवन पहले से ही करते हैं। जिसके कारण अवसाद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। आज 15 से 29 वर्षीय युवाओं में आत्मघात करना मौत का दूसरा सबसे बड़ा कारण है। अवसाद की स्थिति आत्मघात करने अथवा उसका प्रयास करने के संभावित खतरे को बढ़ा देती है। अवसाद की स्थिति आत्मघाती विचारों को जन्म देती है अथवा व्यक्ति उसकी बात करता है। यदि किसी व्यक्ति में इनमें से किसी एक भी लक्षण का पता चले तो इसकी जानकारी तत्काल किसी जिम्मेदार वयस्क व्यक्ति को अवश्य दी जानी चाहिए। जब कभी लोग स्वयं स्थिति से निपटने का प्रयास करते हैं तो आगे नहीं बढ़ पाते। किसी भावुक व्यक्ति को स्पष्ट गहन जानकारी प्रदान करना बहुत कठिन होता है। इसलिए सहायता लेना सदैव उचित होता है।

जागरूकता महत्वपूर्ण

अवसाद को रोका जा सकता है और उसका इलाज किया जा सकता है। अवसाद क्या है और इसका कैसे उपचार किया जा सकता है, इस विषय में और जानकारी प्राप्त होने से इस स्थिति से जुड़े सामाजिक और प्रभावित व्यक्ति के आंतरिक लांछन को कम करने में मदद मिलेगी। साथ ही इस रोग से जुड़ी रुग्णता और मर्त्यता को कम करने में भी सहायक होगी। हम तभी सफल होंगे जब हम अवसाद के कारण होने वाली आत्मघाती मौतें कम कर पाएंगे।

यह आलेख भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित *'इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च'* के अप्रैल, 2017 अंक में *''डिप्रेशन : व्हाई टु टाक ?''* शीर्षक से प्रकाशित सम्पादकीय पर आधारित है।

पालमपुर में आयोजित मेगा विज्ञान प्रदर्शनी में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) ने दिनांक 12–14 सितम्बर, 2017 के दौरान हिमाचल प्रदेश के पालमपुर में आयोजित मेगा विज्ञान प्रदर्शनी में भाग लिया। इस प्रदर्शनी में आई सी एम आर मुख्यालय के अलावा इसके दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान और हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान ने भाग लिया। आई सी एम आर पैवीलियन में आकर्षक पोस्टर्स के माध्यम से आई सी एम आर की शोध गतिविधियों और उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया। आई सी एम आर पैवीलियन में दी जाने वाली जानकारी मुख्यतया आई सी एम आर द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों, इसके महत्वपूर्ण कार्यक्रमों, मलेरिया, फाइलेरिया रोग क्षयरोग, हैज़ा तथा आंत्ररोग, पर्यावरणी एवं व्यावसायिक स्वास्थ्य आदि विषयों पर केन्द्रित थी। हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा निर्मित वीडियो फिल्मों के माध्यम से एनीमिया (अरक्तता) और संतुलित आहार पर जागरूकता प्रदान की गई। माननीय सांसद श्री शान्ता कुमार ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया जो आई सी एम आर पैवीलियन में भी पधारे और आई सी एम आर के वैज्ञानिकों के साथ चर्चा की और आई सी एम आर की शोध गतिविधियों की प्रशंसा की। पालमपुर और आस–पास स्थित कई स्कूलों के बड़ी संख्या में छात्र छात्राओं ने आई सी एम आर पैवीलियन में आए और स्वास्थ्य और अनुसंधान से संबंधित जानकारी प्राप्त की। विद्यार्थियों के लिए स्वास्थ्य संबंधी जानकारी पर आधारित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जो बच्चों में अत्यन्त उत्साहजनक था। विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। आई सी एम आर मुख्यालय की वैज्ञानिक 'जी' डॉ नीरज टण्डन, वैज्ञानिक 'एफ' डॉ रजनी कान्त, राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ उदय कुमार तथा राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की अधिकारी श्रीमती बीना श्रीवास्तव ने आई सी एम आर पैवीलियन में आने–वाले सभी दर्शकों को प्रदर्शित पोस्टर्स के माध्यम से जानकारी प्रदान की।

माननीय सांसद श्री शान्ता कुमार आई सी एम आर पैवीलियन में

माननीय सांसद श्री शान्ता कुमार

दर्शकगण

हिन्दी दिवस के अवसर पर आई सी एम आर मुख्यालय में हिन्दी व्याख्यान का आयोजन

हिन्दी दिवस/हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर आई सी एम आर मुख्यालय में दिनांक 13 सितम्बर, 2017 को हिन्दी में एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ के. एन. पाण्डेय ने आमंत्रित वक्ता डॉ श्रीधर द्विवेदी; स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग की सचिव और आई सी एम आर की महानिदेशक डॉ सौम्या स्वामीनाथन, अपर महानिदेशक डॉ संजय एम. मेहेंदले के साथ–साथ सभागार में उपस्थित सभी वैज्ञानिकगण, अधिकारीगण और कर्मचारीगण का स्वागत किया और वक्ता डॉ द्विवेदी का परिचय प्रस्तुत किया। नई दिल्ली स्थित *नेशनल हार्ट इंस्टीटयूट* के वरिष्ठ सलाहकार, हृदयरोगविज्ञान, प्रो. श्रीधर द्विवेदी ने ''उच्च रक्त चाप : कारण, निवारण और उपचार'' विषय पर अत्यंत रोचक और सूचनापरक व्याख्यान दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डी एच आर की सचिव और आई सी एम आर की महानिदेशक डॉ सौम्या स्वामीनाथन ने की। डॉ मेहेंदले ने आई सी एम आर के शोध परिणामों को सामान्य

मंचासीन बाएं से दाएं डॉ एस. एम. मेहेंदले, डॉ सौम्या स्वामीनाथन एवं प्रो. श्रीधर द्विवेदी

जन तक पहुंचाने में हिन्दी की उपयोगिता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए आह्वान किया कि हमें हिन्दी माध्यम में बड़ी संख्या में लोगों तक स्वास्थ्य संबंधी जानकारी का प्रसार एक मिशन मोड में करना चाहिये। सोशल मीडिया, वेब साइट और प्रिंट माध्यमों के

डॉ सौम्या स्वामीनाथन द्वारा सम्बोधन

द्वारा हिन्दी भाषा में स्वास्थ्य संबंधी उपयुक्त जानकारी बड़ी संख्या में जन साधारण तक पहुंचाई जा सकती है। माननीय महानिदेशक महोदया ने डॉ द्विवेदी को इस अत्यंत महत्वपूर्ण विषय पर हिन्दी में व्याख्यान देने हेतु पधारने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि भारत की केवल 12 प्रतिशत आबादी में उच्च

प्रो. श्रीधर द्विवेदी द्वारा व्याख्यान

रक्त चाप यानि हाइपरटेंशन का नियंत्रण है, इसका प्रमुख कारण संबंधित सूचनाओं का प्रसार नहीं होना है। विशेषतया ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सीय सुविधाओं की कमी और दवाइयों की अपर्याप्त उपलब्धता के कारण वहां स्वास्थ्य संबंधी जानकारी के प्रसार की नितांत आवश्यकता है। महानिदेशक महोदया ने बताया कि आई सी एम आर ने देश के 6 राज्यों के सहयोग में उन राज्यों में हाइपरटेंशन पर शोध कार्यक्रम की शुरुआत करने की योजना

डॉ श्रीधर द्विवेदी, एवं ICMR के वैज्ञानिकगण

तैयार की है। उनमें सम्मिलित हैं – मध्य प्रदेश, गुजरात, तेलंगाना, कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा एक और राज्य पर अभी निर्णय लिया जाना है।

अपने व्याख्यान में डॉ द्विवेदी ने पी पी टी के माध्यम से उच्च रक्त चाप यानि हाइपरटेंशन के लिए जिम्मेदार विभिन्न कारकों जैसे कि अधिक मात्रा में नमक का सेवन, मोटापा, तनाव, अस्वास्थ्यकर जीवन शैली, धूम्रपान आदि पहलुओं पर वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित जानकारी प्रदान की। डॉ द्विवेदी ने बताया कि हाइपरटेंशन की स्थिति कभी भी अकेले नहीं पाई जाती। उसके साथ–साथ वृक्क पात (किडनी फेल होने), पक्षाघात (पैरालिसिस), हृदयघात (हार्ट फेल) आदि जैसी जानलेवा स्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं।

श्रोतागण

उच्च रक्त चाप के लिए अधिक नमक के सेवन के साथ–साथ मोटापा, तनाव, धूम्रपान, जैसी स्थितियां जिम्मेदार होती हैं। उन्होंने बताया कि हाइपरटेंशन की 30 प्रतिशत घटनाओं के लिए नमक का अधिक मात्रा में सेवन करना है। हमें प्रतिदिन 6 ग्राम से अधिक नमक का सेवन नहीं करना चाहिये। संतुलित भोजन का सेवन करने और नियमित व्यायाम अथवा शारीरिक श्रम के साथ जुड़ी जीवन शैली अपना कर हाइपरटेंशन के रूप में स्वास्थ्य के छुपे शत्रु से बचा जा सकता है। व्याख्यान के अंत में सभागार में बड़ी संख्या में उपस्थित श्रोतागण ने हाइपरटेंशन से जुड़े अनेक प्रश्न पूछे जिनका डॉ द्विवेदी ने सहज हिंदी भाषा में उत्तर दिए। इस व्याख्यान में आई सी एम आर मुख्यालय के साथ–साथ आई सी एम आर के

डॉ एस. एम. मेहेंदले द्वारा सम्बोधन

दिल्ली स्थित संस्थानों के वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों की उपस्थिति रही। व्याख्यान के अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान, पुणे द्वारा हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

पुणे स्थित राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान में दिनांक 14 सितम्बर, 2017 हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम सरस्वती वंदना तत्पश्चात दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस अवसर पर संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य व सभी स्टाफ और प्रभारी निदेशक भी शामिल थे।

डॉ आर.आर. गंगाखेडकर, प्रभारी–निदेशक ने कहा कि हिंदी बोलते समय हमें गर्व होना चाहिए, हमे राष्ट्रीय ध्वज की ही तरह राजभाषा को भी सम्मान देना चाहिए। दिनाक 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को देवनागरी लिपि में भारत की कार्यकारी और राजभाषा का दर्जा आधिकारिक रूप से दिया गया था और तभी से देश में 14 सितम्बर का दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान कई हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जैसे कि निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी स्लोगन प्रतियोगिता और वाक् प्रतियोगिता आदि, इसमें कार्यालय के अधिकारियो व कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया । विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं में डॉ सुचित कांबले, डॉ सीमा सहाय, डॉ आरती माने, डॉ विजय नेमा, सुनीता कुम्भार, श्री माएकल परेरा, शमीना शेख, कुमारी रंजना, अंकिता पटनी आदि सम्मिलित थे जिन्हें प्रभारी–निदेशक महोदय ने पुरस्कार वितरित किए। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

सभागार का दृश्य

मंचासीन अधिकारीगण

भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान समारोह के अंतर्गत चेन्नई में आयोजित मेगा विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्योग एक्स्पो में आई सी एम आर की भागीदारी

भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान समारोह के अंतर्गत दिनांक 13–16 अक्टूबर, 2017 के दौरान चेन्नई में आयोजित मेगा विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्योग एक्स्पो में आई सी एम आर ने भाग लिया। इस प्रदर्शनी में पोस्टर्स के माध्यम से आई सी एम आर की शोध गतिविधियां और उपलब्धियां प्रदर्शित की गईं । दिनांक 15 अक्टूबर, 2017 को माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे आई सी एम आर पैवीलियन में पधारे। स्वास्थ्य अनुसंधान की सचिव और आई सी एम आर की महानिदेशक डॉ सौम्या स्वामीनाथन ने माननीय मंत्री महोदय को आई सी एम आर की विभिन्न गतिविधियों के विषय में अवगत कराया। मंत्री महोदय, ने आई सी एम आर पैवीलियन में उपस्थित डॉ नीरज टण्डन, सहित अन्य अधिकारियों के साथ चर्चा की और आई सी एम आर की जारी गतिविधियों की सराहना की। इस अवसर पर माननीय मंत्री महोदय ने आई सी एम आर द्वारा "स्वस्थ भारत" शीर्षक से आयोजित प्लेनरी सत्र की अध्यक्षता भी की। इस चार दिवसीय प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में दर्शक पधारे और स्वास्थ्य एवं अनुसंधान से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त की।

माननीय स्वा. एवं प. क. राज्य मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे महानिदेशक महोदया को शील्ड प्रदान करते हुए

डॉ हर्ष वर्धन माननीय केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री आई सी एम आर पैवीलियन में

आई सी एम आर पैवीलियन में डॉ नीरज टण्डन एवं अधिकारीगण

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान, नई दिल्ली में हिन्दी दिवस व्याख्यान का आयोजन

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आई सी एम आर मुख्यालय परिसर स्थित राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान द्वारा दिनांक 21 सितम्बर, 2017 को हिन्दी व्याख्यान का आयोजन किया गया। परिषद मुख्यालय के सम्मेलन कक्ष में आयोजित इस कार्यक्रम में नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के वृक्कविज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. संजय अग्रवाल ने ''वृक्क रोग एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या'' विषय पर सरल हिन्दी भाषा में व्याख्यान दिया।

सर्वप्रथम, राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान के प्रभारी–निदेशक डॉ डी. के. शुक्ला ने वक्ता प्रो. अग्रवाल, आई सी एम आर की वरिष्ठ वित्तीय सलाहकार श्रीमती ऋतु ढिल्लों पूर्व निदेशक डॉ अरविन्द पाण्डेय के साथ–साथ सभागार में उपस्थित सभी श्रोताओं का स्वागत किया।

श्रोतागण

डॉ अग्रवाल द्वारा व्याख्यान

श्रोतागण

वृक्क रोग पर व्याख्यान में प्रो. अग्रवाल ने बताया कि असंचारी रोगों में वृक्क रोगों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने मृत्यु के प्रमुख कारणों पर आंकड़े प्रस्तुत करते हुए व्यक्त किया कि प्रायः वृक्क रोगों से होने वाली मौतों को प्रस्तुत नहीं किया जाता। चिरकारी वृक्क रोग से ग्रस्त रोगी बहुधा फेफड़े अथवा हृद् प्रणाली से जुड़े रोगों से ग्रस्त होते हैं। उन्होंने बताया कि एक बार वृक्क रोग चिरकारी रूप में पहुंच जाए तो सामान्य स्थिति में आने की बिल्कुल संभावना नहीं होती। जहां आबादी की वृद्धि दर 1.3 प्रतिशत है वहीं देश में घातक स्थिति के वृक्क रोग की वृद्धि दर 8 प्रतिशत है। इस कारण भारतीय स्वास्थ्य प्रणाली में चिरकारी वृक्क रोग को एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य के रूप में सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता है। डॉ अग्रवाल के अनुसार विश्व में 19.2 मिलियन लोग चिरकारी वृक्क रोग से पीड़ित हैं। भारत में चिरकारी वृक्क पात *(क्रॉनिक किडनी फेल्योर)* की व्यापकता 0.78 प्रतिशत है और भारत में प्रति वर्ष 1.5 लाख लोग अंतिम अवस्था के वृक्क रोग के रोगी हो जाते हैं। उन्होंने सुझाव दिया हम सभी को एक निश्चित अन्तराल पर वृक्क रोगों की जांच करानी चाहिए। इसे सरल डिपस्टिक विधि द्वारा मूत्र में प्रोटीन की उपस्थिति की जांच करके की जा सकती है। रक्त में सीरम क्रिएटिनिन की जांच द्वारा भी चिरकारी वृक्क रोग की पहचान की जा सकती है। हमें अपनी जीवन शैली में बदलाव करते हुए अतिरक्तदाब (हाइपरटेंशन) और मधुमेह पर नियंत्रण रखकर भी वृक्क रोगों को रोका जा सकता है।

व्याख्यान के अंत में श्रोताओं ने डॉ अग्रवाल से अनेक प्रश्न पूछे जिनका उन्होंने ने बड़ी सरल हिन्दी में जवाब दिया। अंत में संस्थान के प्रभारी–निदेशक डॉ डी. के. शुक्ला के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

आई सी एम आर पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक 11 अक्टूबर, 2017 को आई सी एम आर मुख्यालय के समीप स्थित राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत) के सभागार में आई सी एम आर पुरस्कार वितरण का भव्य समारोह आयोजित किया गया। माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल ने आई सी एम आर के विभिन्न पुरस्कारों से पुरस्कृत मेडिकल वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए । इस अवसर पर डॉ वी. के. पॉल, सदस्य, नीति आयोग तथा प्रो. के. विजयराधवन, सचिव, जैवप्रौद्योगिकी विभाग सम्मानित अतिथिगण, तथा श्री सी.के. मिश्रा, सचिव, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग; "वैद्य" श्री राजेश कोटेचा, विशेष सचिव, आयुष मंत्रालय; तथा लेफ्टि-जनरल बिपिन पुरी, डी जी एम एस (सेना) विशिष्ट अतिथिगण के रूप में उपस्थित थे। माननीय मंत्री महोदया ने वर्ष 2013, 2014 तथा 2015 एवं 2016 के लिए पुरस्कृत कुल 86 विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया।

माननीय स्वा. एवं प. क. राज्य मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल और गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन

युवा शोधकर्ताओं को प्रोत्साहित करने के लिए मेडिकल छात्रों के लिए एक लघु–कालिक स्टूडेण्टशिप ;एस टी एस), पुरस्कार की शुरुआत की गई है। माननीय मंत्री महोदया ने बर्दवान स्थित बर्दवान मेडिकल कॉलेज के एस टी एस पुरस्कृत डॉ कमीरुल इस्लाम को आई सी एम आर – एस टी एस पुरस्कार से सम्मानित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए बधाई दी।

नेशनल गाइडलाइंस फॉर स्टेम सेल रिसर्च एवं
ICMR स्ट्रेटेजिक प्लान ऐण्ड एजेण्डा 2030 का विमोचन

माननीय मंत्री महोदया ने आई सी एम आर द्वारा विकसित एवं प्रकाशित *"नेशनल गाइडलाइंस फॉर स्टेम सेल रिसर्च"* का विमोचन भी किया। डॉ वी.के. पॉल ने *"आई सी एम आर स्ट्रेटेजिक प्लान ऐण्ड एजेण्डा 2030"* शीर्षक के दस्तावेज का विमोचन किया।

इस अवसर पर माननीय मंत्री महोदया ने सभी पुरस्कृत मेडिकल वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए जैवआयुर्विज्ञान में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए डॉ बी. आर. अम्बेडकर शताब्दी पुरस्कार से

माननीय मंत्री महोदया द्वारा सम्बोधन

सम्मानित चेन्नई स्थित *डॉ मोहंस डायबिटीज स्पेशियलिटीज* केन्द्र के डॉ वी. मोहन तथा वाराणसी स्थित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के डॉ श्याम सुन्दर को लाइफ टाइम उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित होने का विशेष उल्लेख करते हुए उन्हें बधाई दी।

माननीय मंत्री महोदया ने देश की स्वास्थ्य समस्याओं को दूर करने और लोगों के स्वास्थ्य स्तर को ऊंचा बढ़ाने में आई सी एम आर के योगदानों का उल्लेख किया। हाल के वर्षों में एनीमिया और घेंधा के नियंत्रण के लिए डबल फोर्टीफाइड नमक, H1N1, जापानी मस्तिष्क शोथ, कालाज़ार जैसे संचारी रोगों के लिए स्वदेशी एवं किफायती नैदानिक किटों का विकास महत्वपूर्ण उपलब्धियां हैं।

डॉ सौम्या स्वामीनाथन द्वारा सम्बोधन

माननीय मंत्री महोदया ने आई सी एम आर द्वारा विगत एक वर्ष के दौरान शुरआत की गई नवीन पहलों का भी उल्लेख किया जिनमें, टी बी उन्मूलन के लिए *"इंडिया टी बी रिसर्च कर्शोशियम"*, 500 से अधिक भारतीय खाद्यों की पोषक सारणी पर एक पुस्तक; सामान्य खाद्य पदार्थों के पोषणज मान के लिए एक नवीन मोबाइल ऐप का विकास; एंटी माइक्रोबियल प्रतिरोधी संचारी रोगों तथा असंचारी रोगों के क्षेत्रों में नवीन परियोजनाओं की शुरुआत सम्मिलित है । इस अवसर पर उन्होंने आई सी एम आर को मधुमेह, हृद्वाहिकीय रोग, निद्रा विकार, मानसिक स्वास्थ्य, टी बी, मलेरिया, एच आई वी, आदि क्षेत्रों में कार्यरत अन्य संस्थानों के सहयोग में शोध कार्य करने का आह्वान किया।

माननीय मंत्री महोदया ने आई सी एम आर की महानिदेशक डॉ सौम्या स्वामीनाथन के विश्व स्वास्थ्य संगठन मुख्यालय, जेनेवा के लिए उपमहानिदेशक (प्रोग्राम) जैसे अत्यन्त प्रतिष्ठित पद के लिए चयन किए जाने पर उन्हें बधाई देते हुए इसे न केवल आई सी एम आर बल्कि पूरे देश के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि बताया।

इस अवसर पर स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग की सचिव एवं आई सी एम आर की महानिदेशक डॉ सौम्या स्वामीनाथन ने बताया कि आई सी एम आर विगत एक शताब्दी से अत्यन्त कठिन स्वास्थ्य चुनौतियों के लिए हल ढूंढने के लिए वैज्ञानिक शोध को बढ़ावा दे रहा है और वैज्ञानिकों को आवश्यक प्लेटफार्म एवं युक्तियां प्रदान करने की दिशा में प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि अगली पीढ़ी के वैज्ञानिकों को उनकी विशेषता प्राप्त करने और देश की सेवा करने के लिए एक अनुकूल वातावरण पैदा करना हमारा निरन्तर प्रयास रहेगा। महानिदेशक महोदया ने *"आई सी एम आर स्ट्रेटिजिक प्लान ऐण्ड विज़न 2030"* के विषय में बताया कि इस दस्तावेज में देश में व्याप्त असंचारी रोगों, एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध, उभरते संक्रमणों, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्य प्रणाली एवं स्वास्थ्य सेवा उपलब्धता से जुड़े पहलुओं जैसी चुनौतियों का सामना करने के लिए आगामी सात वर्षों के लिए आई सी एम आर के भावी कार्यक्रमों का उल्लेख किया गया है। इस अवसर पर नीति आयोग के लिए सदस्य डॉ पॉल और जैवप्रौद्योगिकी विभाग के सचिव डॉ के. विजय राघवन ने भी पुरस्कृत बायोमेडिकल शोधकर्ताओं को बधाई दी और आई सी एम आर की जारी गतिविधियों की सराहना की।

पुरस्कृत वैज्ञानिकों के साथ ग्रुप फोटोग्राफ

आई सी एम आर के अपर महानिदेशक डॉ संजय एम. मेहेन्दले के धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

वर्ष 2015 एवं वर्ष 2016 के लिए आई सी एम आर के पारितोषिक/पुरस्कार

वार्षिक पारितोषिक/पुरस्कार 2015–2016	
पुरस्कार प्राप्तकर्ता	**अनुसंधान क्षेत्र**
अमृत मोदी यूनिकेम पुरस्कार – 2015	
डॉ शेफाली गुलाटी आचार्य एवं प्रमुख शिशु तंत्रिकाविज्ञान प्रभाग बालचिकित्साविज्ञान विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली–110 029	**मिरगी और अन्य तंत्रिका एवं विकासात्मक विकारों**
बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार – 2015	
डॉ प्रमोद कुमार गर्ग आचार्य, जठरांत्ररोगविज्ञान विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली–110 029	**जैवआयुर्विज्ञान**

डॉ एच.बी. डिंगले स्मारक पुरस्कार – 2015	
डॉ झुमा शंकर सहायक आचार्य, बाल फुफ्फुसरोगविज्ञान एवं आपातकालीन सुरक्षा प्रभाग, बालचिकित्साविज्ञान विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली–110 029	**बालचिकित्साविज्ञान**
आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार – 2015	
डॉ नीलिमा मिश्र वैज्ञानिक 'ई' आई सी एम आर–राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली – 110 077	**मलेरिया**
अल्पसुविधा प्राप्त समुदायों के वैज्ञानिकों के लिए जैवआयुर्विज्ञानी अनुसंधान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार – 2015	
डॉ निशा सिंह सहायक आचार्य जीवरसायनविज्ञान विभाग स्कूल ऑफ लाइफ़ साइंसेज़ एच.एन.बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर (गढ़वाल) – 246 174	
आई सी एम आर तिलक वेंकोबा राव पुरस्कार – 2015	
डॉ उर्वाक्ष एम. मेहता सहायक आचार्य मनोविकारचिकित्सा विभाग वेलकम ट्रस्ट/डी बी टी इंडिया एलाएंस अर्ली कैरियर फेलो राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिकाविज्ञान संस्थान बेंगलुरू–560 029 (कर्नाटक)	**मनोविज्ञानी चिकित्साविज्ञान**
मेजर जनरल साहेब सिंह सोखे पुरस्कार – 2015	
डॉ रुचि सिंह वैज्ञानिक 'ई' आई सी एम आर – राष्ट्रीय विकृतिविज्ञान संस्थान सफदरजंग अस्पताल कैंपस नई दिल्ली – 110 029	**संचारी रोग**
शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार – 2015	
डॉ प्रो. अमित कुमार दत्ता आचार्य जठरांत्ररोगविज्ञान विभाग क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल वेल्लोर – 632 004 (तमिल नाडु)	**जठरांत्ररोगविज्ञान**
डॉ सुभाष मोहन अग्रवाल वैज्ञानिक 'डी' जैवसूचनाविज्ञान प्रभाग आई सी एम आर–राष्ट्रीय कैंसर निवारण एवं अनुसंधान संस्थान नोएडा–201 301 (उत्तर प्रदेश)	**कैंसर में औषध खोज की गति बढ़ाने के लिए**

डॉ दीपिका बंसल सहायक आचार्य फार्मेसी प्रैक्टिस विभाग राष्ट्रीय फार्मास्युटिकल शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (NIPER) मोहाली–160 062 (पंजाब)	**टाइप 2 मधुमेह की जटिलताओं के निवारण**
डॉ रियाज़ अहमद सहायक आचार्य प्राणिविज्ञान विभाग अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ – 202 001 (उत्तर प्रदेश)	**NDMA प्रेरित यकृत तंतुमयता के सुधार**
एक वर्ष के अन्तराल पर प्रदान किए जाने वाले पारितोषिक/पुरस्कार – 2015	
उत्कृष्ट जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान के लिए डॉ बी.आर. अम्बेडकर शताब्दी पुरस्कार–2015	
डॉ श्याम सुन्दर आचार्य, चिकित्साविज्ञान आयुर्विज्ञान संस्थान बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी – 221 005 (उत्तर प्रदेश)	**अंतरांग लीशमैनियता की चिकित्सा**
डॉ डी.एन. प्रसाद स्मारक व्याख्यान पुरस्कार – 2015	
डॉ प्रो. सुरेन्दर सिंह आचार्य भेषजगुणविज्ञान विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली–110 029	**शोथज विकारों में प्रयुक्त स्वदेशी औषधियों के भैषजिक वैधता निर्धारण**
डॉ जे.बी. श्रीवास्तव व्याख्यान पुरस्कार – 2015	
डॉ सुनीत कुमार सिंह सहायक आचार्य (आण्विक प्रतिरक्षारोगविज्ञान) आण्विक जैविकी यूनिट आयुर्विज्ञान संस्थान बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी–221 005 (उत्तर प्रदेश)	**विषाणुविज्ञान**
डॉ एम.ओ.टी. अयंगार स्मारक पुरस्कार – 2015	
डॉ मनोज कुमार दास प्रभारी अधिकारी एवं वैज्ञानिक 'ई' आई सी एम आर–राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान फील्ड यूनिट रांची – 835 301 (झारखण्ड)	**मलेरिया और फाइलेरिया रोग की समाप्ति की दिशा में एक कदम**
डॉ प्रेम नाथ वाही पुरस्कार – 2015	
डॉ सुबाष चन्द्र गुप्ता सहायक आचार्य जीवरसायनविज्ञान विभाग आयुर्विज्ञान संस्थान बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी – 221 005 (उत्तर प्रदेश)	**कैंसर के निवारण और इलाज के लिए चिकित्सीय लक्ष्य निर्धारण**

आई सी एम आर चुतर्वेदी धनश्याम दास जयगोपाल स्मारक पुरस्कार – 2015	
डॉ संगीता मुखोपाध्याय स्टाफ वैज्ञानिक – VI एवं ग्रुप लीडर आण्विक कोशिका जैविकी डी एन ए फिंगरप्रिंटिंग एवं नैदानिकी केन्द्र हैदराबाद – 500 001 (तेलंगाना)	**प्रतिरक्षाविज्ञान**
आई सी एम आर चतुर्वेदी कलावती जगमोहन दास स्मारक पुरस्कार – 2015	
डॉ अक्षय कुमार बिसोई आचार्य सी टी वी एस विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली – 110 029	**हृद्वाहिकीयरोग**
आई सी एम आर श्रीमती स्वर्ण कान्ता डिंगले व्याख्यान पुरस्कार – 2015	
डॉ रोहिणी रवीन्द्रन नायर पोस्ट डॉक्टरल फेलो यूनिवर्सिटी ऑफ सैन रैफेल, क्रोमैटिन डायनामिक यूनिट 5 पियानो डी आई बी आई टी 2 (बैसीलिका) वाया ओल्गेटिना, 58, 20132 मिलानो, इटली	**प्रजनन जैविकी**
वार्षिक पारितोषिक/पुरस्कार –2016	
अमृत मोदी यूनिकेम पुरस्कार – 2016	
डॉ वर्षा पोतदार वैज्ञानिक 'सी' आई सी एम आर – राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान 20– ए, डॉ अम्बेडकर रोड पुणे – 411 001 (महाराष्ट्र)	**वक्षरोग**
बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार – 2016	
डॉ प्रो. शैली अवस्थी आचार्य बालचिकित्साविज्ञान विभाग किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी लखनऊ–226 003 (उत्तर प्रदेश)	**बच्चों में मर्त्यता पर कृमि निष्कासन सहित व रहित स्थितियों में विटामिन ए सम्पूरण के प्रभाव**
आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार – 2016	
डॉ एलोरा सेन वैज्ञानिक –V राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र एन एच – 8, मानेसर गुरुग्राम–122 051 (हरियाणा)	**शोथ प्रेरित चयापचयज परिवर्तनः अर्बुदजनन में भावी प्रभाव**

अल्पसुविधा प्राप्त समुदायों के वैज्ञानिकों के लिए जैवआयुर्विज्ञानी अनुसंधान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार – 2016	
डॉ डी.एन. शर्मा आचार्य, विकिरणचिकित्सा विभाग आई आर सी एच अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली –110 029	**स्त्रीरोगविज्ञानी दुर्दमताओं के लिए विकिरण चिकित्सा/ब्रैकीथिरैपी**
अल्पविकसित क्षेत्रों में जैवआयुर्विज्ञानी अनुसंधान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार – 2016	
डॉ विकाश कुमार दुबे आचार्य, जैवविज्ञान एवं जैवइंजीनियरिंग विभाग भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान गुवाहाटी – 781 039 (असम)	**लीशमानिया परजीवी पर अध्ययन**
शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार – 2016	
डॉ राजश्री दास पात्रा सहायक आचार्य – III एमिटी जैवप्रौद्योगिकी संस्थान एमिटी विश्वविद्यालय नोएडा – 201 301 (राजस्थान)	**हेलिकोबैक्टर पाइलोरी संबद्ध जठरांत्र – ग्रहणी रोग**
डॉ अमित मिश्रा सहायक आचार्य, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर – 342 011	**प्रोटीन गुणवत्ता नियंत्रण प्रक्रियाएंः वयोवृद्धि और तंत्रिकाह्रास में संबद्धता**
डॉ संजीव दास स्टाफ वैज्ञानिक – V राष्ट्रीय प्रतिरक्षारोगविज्ञान संस्थान अरुणा आसफ अली मार्ग नई दिल्ली – 110 067	**P53 मध्यस्थ ट्रांस – एक्टीवेशन**
डॉ विश्वनाथ तिवारी सहायक आचार्य जीवरसायनविज्ञान विभाग केन्द्रीय राजस्थान विश्वविद्यालय अजमेर – 305 817	***एसिनेटोबैक्टर बाउमानी* में कार्बापेनीम के प्रति प्रतिरोध के निर्धारण**
श्रीमती कमल सतबीर पुरस्कार – 2016	
डॉ सहजल धूरिया सहायक आचार्य पल्मोनरी मेडिसिन विभाग स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, चण्डीगढ़ – 160 012	**मीडियास्टिनम रोगों के निदान में एण्डोब्रोंकियल अल्ट्रासाउण्ड की भूमिका**
एक वर्ष के अन्तराल पर प्रदान किए जाने वाले पारितोषिक/पुरस्कार – 2016	
बी जी आर सी रजत जयन्ती व्याख्यान पुरस्कार – 2016	
डॉ बाबू राव वुन्दिंति वैज्ञानिक 'ई' आई सी एम आर राष्ट्रीय प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान संस्थान के ई इम अस्पताल परिसर, परेल मुम्बई–400 012 (महाराष्ट्र)	**रुधिरविज्ञानी रोगों के आण्विक आधार को ज्ञात करने**

डॉ कुन्ती एवं डॉ ओम प्रकाश व्याख्यान पुरस्कार – 2016	
डॉ चाणक्य नाथ कुण्डू आचार्य स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी कैम्पस–11, पाटिया के आई आई टी विश्वविद्यालय भुवनेश्वर–751 024 (ओडिशा)	**कैंसर जनन रोधी संभाव्यता**
डॉ एम.के. शेषाद्री पुरस्कार – 2016	
डॉ स्मिता अस्थाना वैज्ञानिक 'डी' जैवसांख्यिकी एवं जानपदिक रोगविज्ञान प्रभाग आई सी एम आर – राष्ट्रीय कैंसर निवारण एवं अनुसंधान संस्थान नोएडा – 201 301 (उत्तर प्रदेश)	**गर्भाशय ग्रीवा कैंसर निवारण अध्ययन**
डॉ पी.एन. राजू व्याख्यान पुरस्कार – 2016	
डॉ दीपक बंसल आचार्य बालचिकित्सा–रुधिरविज्ञान–अर्बुदविज्ञान यूनिट बालचिकित्साविज्ञान विभाग स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चण्डीगढ़ – 160 012	**अध्ययन**
डॉ विद्या सागर पुरस्कार – 2016	
डॉ सन्दीप ग्रोवर अतिरिक्त आचार्य मनोविकार चिकित्सा विभाग स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चण्डीगढ़ – 160 012	**मानसिक रोग**
डॉ वाई.एस. नारायण राव व्याख्यान पुरस्कार – 2016	
डॉ. प्रो. अनुराधा चौधरी सहायक आचार्य कवकविज्ञान प्रभाग, सूक्ष्मजीवविज्ञान विभाग बल्लभ भाई पटेल वक्ष संस्थान दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली – 110 007	**सूक्ष्मजीवविज्ञान**
आई सी एम आर लाला राम चन्द कंधारी पुरस्कार – 2016	
डॉ शेख तास्दक अब्दुल्ला वरिष्ठ वैज्ञानिक पी के–पी डी एवं विषविज्ञान प्रभाग सी एस आई आर – इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन कैनाल रोड जम्मू – 180 001 (जम्मू ऐण्ड कश्मीर)	**त्वचारोगविज्ञान एवं रतिरोगविज्ञान**

आई सी एम आर एम.एन. सेन व्याख्यान पुरस्कार – 2016	
डॉ सुरेन्दर कुमार याछा आचार्य एवं विभागाध्यक्ष बाल–जठरांत्ररोगविज्ञान विभाग संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान लखनऊ	**बालकालीन विकारों हेतु नवीन आयाम**
कैंसर के क्षेत्र में अनुसंधान हेतु नोवार्तिस व्याख्यान पुरस्कार – 2016	
डॉ सिब शंकर रॉय वरिष्ठ मुख्य वैज्ञानिक कोशिका जैविकी एवं शरीरक्रियाविज्ञान प्रभाग सी एस आई आर–भारतीय रसायन जैविकी संस्थान 4, राजा एस. सी. मलिक रोड कोलकाता – 700 032 (पं. बं.)	**डिम्बग्रंथि की कैंसर कोशिकाओं के प्रसार एवं प्रफलन की आण्विक प्रक्रियाएं**
प्रो. बी.सी. श्रीवास्तव संस्थापना पुरस्कार – 2016	
डॉ अजीत सिंह भदौरिया जानपदिक रोगविज्ञानी एवं जनस्वास्थ्य विशेषज्ञ चिकित्सीय अनुसंधान विभाग यकृत एवं पित्त विज्ञान संस्थान वसन्त कुंज नई दिल्ली – 110 070	**असंचारी रोगों हेतु खतरे की संभावना वाले कारकों की व्यापकता**

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के विभिन्न तकनीकी दलों/तकनीकी समितियों की नई दिल्ली में सम्पन्न बैठकें:

सेलुलर बायोलॉजी बेस्ड थिरैप्युटिक ड्रग इवैल्युएशन कमीटी (CBBTDEC) की 12वीं बैंठक	1 सितम्बर, 2017
बी एम एस प्रभाग के फेलोशिप विशेषज्ञ दल की बैंठक	4 सितम्बर, 2017
दुर्लभ रोग के पंजीकरण (रजिस्ट्री) पर विशेषज्ञ दल की बैठक	5 सितम्बर, 2017
"इंफ्लुएंज़ा पर शोध प्राथमिकताओं" पर चर्चा करने हेतु विशेषज्ञ दल की बैठक	6 सितम्बर, 2017
भारत में आर्ट क्लीनिक्स और बैंक्स के राष्ट्रीय पंजीकरण केन्द्र पर विशेषज्ञ एवं मॉनीटरिंग समिति की बैठक	6 सितम्बर, 2017
SRF/RA फेलोशिप्स प्रस्तावों पर कार्यवाही हेतु चर्चा करने के लिए प्रभाग अध्यक्षों और प्रोग्राम अधिकारियों के साथ बैठक	7 सितम्बर, 2017
असंचारी रोग पर इंटरवेंशन कार्यक्रमों को सुदृढ़ बनाने हेतु संभावित सहयोग पर बैठक	7 सितम्बर, 2017
मुखीय स्वास्थ्य के क्षेत्र में परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	13 सितम्बर, 2017
भारत जर्मनी परियोजना की द्वितीय वार्षिक रिपोर्ट की समीक्षा करने हेतु टास्क फोर्स समूह की बैठक	12 सितम्बर, 2017

टी बी वैक्सींस पर 5 ग्लोबल फोरम पर भारतीय सलाहकार पैनेल की द्वितीय बैठक	12 सितम्बर, 2017
राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिकाविज्ञान संस्थान, (NIMHANS) बंगलोर स्थित उन्नत अनुसंधान केन्द्र (CAR) पर वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक	12 सितम्बर, 2017
रोटावाइरस वैक्सीन के प्रभाव के मूल्यांकन अध्ययन पर संचालन समिति की प्रथम बैठक	12 सितम्बर, 2017
ई सी डी प्रभाग की विशेषज्ञ समिति की बैठक	18 सितम्बर, 2017
मोस्टेक (इज़राइली कम्पनी) द्वारा उनकी डेंगी नियंत्रण प्रौद्योगिकी को प्रस्तुत करने और सहयोग के लिए संभावनाओं का पता लगाने के लिए एक बैठक	18 सितम्बर, 2017
नेशनल एपेक्स कमीटी फॉर स्टेम सेल रिसर्च ऐण्ड थिरैपी (NAC-SCRT) की 25वीं उपसमिति की बैठक	19 सितम्बर, 2017
गोरखपुर में DHS स्टडी योजना पर चर्चा हेतु विशेषज्ञ दल की बैंठक	21 सितम्बर, 2017
''बर्डन ऑफ नॉन कम्युनिकेबल डिसीसेज़ ऐण्ड एसोसिएटिड रिस्क फेक्टर्स फॉर इंडिया'' (BOD-NCD) परियोजना शीर्षक से कार्य प्रणाली समूह के लिए तकनीकी सलाहकार समिति की बैठक	21 सितम्बर, 2017
तीव्र कोरोनरी इवेंट (MACE रजिस्ट्रीज़) के प्रबंधन पर रजिस्ट्रियों के राष्ट्रव्यापी नेटवर्क की स्थापना के लिए पायलट अध्ययन	26 सितम्बर, 2017
कार्यान्वयन अनुसंधान पर ''LOI$_s$ की जांच के लिए जांच समिति की बैठक	27 सितम्बर, 2017
पोस्ट डॉक्टरल फेलोशिप पद (PDF) के लिए 16वें बेंच हेतु चयन	27 सितम्बर, 2017
''BEAT (बिल्डिंग एवीडेंस फॉर एडवांसिंग न्यु ट्रीटमेंट फॉर प्री–XDR/DR-TB टी बी अध्ययन पर बैठक	28 सितम्बर, 2017
असंचारी रोग संबंधी इंटरवेंशंस को सुदृढ बनाने हेतु क्षमता सहयोग	3 अक्टूबर, 2017
नैदानिक परीक्षण रजिस्ट्री भारत की समीक्षा समिति की बैठक	10 अक्टूबर 2017
MD/MS/DM/MCH, थीसिस के लिए वित्तीय सहायता हेतु विशेषज्ञ समूह की बैठक	10 अक्टूबर, 2017
पूर्ण परियोजनाओं की अंतिम रिपोर्ट की समीक्षा हेतु सलाहकार समूह की बैठक	11 अक्टूबर, 2017
महामारी विज्ञान और कार्यान्वयन अनुसंधान पर कार्यकारी समूह और विशेषज्ञ समूह की बैठक	13 अक्टूबर, 2017
फर्म के साथ विभिन्न लॉजिस्टिक पहलुओं पर चर्चा हेतु आई सी एम आर तकनीकी सह विशेषज्ञ समिति की बैठक	16 अक्टूबर, 2017
आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना तमिल नाडु और केरल प्रदेशों में डाइलिसिस रजिस्ट्री की स्थापना हेतु बैठक	17 अक्टूबर, 2017
भारत ई–अपशिष्ट (ई–वेस्ट) परियोजना पर बैठक	17 अक्टूबर, 2017
भारतीय बच्चों और वयस्कों में HIV प्रतिरोध और उसकी वृद्वि हेतु कोहोर्ट्स के साथ बैठक	24 अक्टूबर, 2017
महामारीविज्ञान और कार्यान्वयन अनुसंधान पर कार्यकारी समूह और विशेषज्ञ समूह की बैठक	25 अक्टूबर, 2017
इंजेक्टेबल गर्भनिरोध 'साइक्लोफेम' की स्थिति की समीक्षा हेतु विशेषज्ञ समूह की बैठक	25 अक्टूबर, 2017
इंडिया रिसर्च कंशोर्शियम पर अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सलाहकार समूह की बैठक	31 अक्टूबर, 2017

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में आई सी एम आर के वैज्ञानिकों की भागीदारी

आई सी एम आर मुख्यालय के अपर महानिदेशक डॉ एस. एम. मेहेन्दले ने ओस्लो, नॉर्वे में "CEPI वैज्ञानिक सलाहकार समूह की बैठक में भाग लिया (23 अगस्त, 2017)।

आई सी एम आर मुख्यालय के वैज्ञानिक 'जी' डॉ आर. एस. धालीवाल ने केप टाउन, दक्षिण अफ्रीका में आई सी एम आर इन दि GACD' बैठक और वैज्ञानिक कार्यशाला में भाग लिया (4–8 सितम्बर, 2017)।

राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'ई' डॉ प्रज्ञा डी. यादव ने दिसालोनिकी, ग्रीस में ''क्रीमियन–कांगो हीमोरैजिक फीवर (CCHF)'' पर दूसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया (10.12 सितम्बर, 2017)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय में वैज्ञानिक 'ई' डॉ मंजू राही ने डर्बन, दक्षिण अफ्रीका में आयोजित वैश्विक स्वास्थ्य श्रृंखला संगोष्ठियों के अंतर्गत आयोजित विषय वैक्टर्स रोगजन और रोगः वर्तमान प्रकृत्तियां और उभरती चुनौतियां (TI-2018) पर संपन्न संगोष्ठी में भाग लिया (10–14 सितम्बर, 2017)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय में वैज्ञानिक 'जी' डॉ आर. एस. धालीवाल ने बुएनोस आर्यस, अर्जेन्टीना में GACD प्रबंधन समिति में आई सी एम आर साथ में वार्षिक GACD वैज्ञानिक बैठक में भाग लिया (2–7 अक्टूबर, 2017)।

आई सी एम आर मुख्यालय के अपर महानिदेशक डॉ एस. एम. मेहन्दले ने वाशिंगटन डी सी, यू एस ए में ''ओपन सांइस 2017 ग्रेड चेलेंज पर वार्षिक बैठक और कार्यशाला में भाग लिया (1–6 अक्टूबर, 2017)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वित्तीय सहायता में सम्पन्न एवं भावी संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन

विषय	दिनांक एवं स्थान	सम्पर्क के लिए पता
PGITC वतजीव CME- 2017	15–16 जुलाई, 2017 बेलागावी	डॉ किरन एस पाटिल जे. एन. मेडिकल कॉलेज बेलागावी (कर्नाटक)
प्राकृतिक पॉलीमेरिक आधारित नैनोटेक्नोलॉजी में वर्तमान प्रवृत्तियां : नेत्रीय औषध वितरण प्रणाली का संदर्भ पर सम्मेलन	11–26 सितम्बर, 2017 सतारा	डॉ प्रवीन कोंडिबा पवार गौरीशंकर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल एजुकेशन ऐण्ड रिसर्च लिम्ब सतारा (महाराष्ट्र)
पल्सेटिंग माइंड्स पर संगोष्ठी	20 सितम्बर, 2017 नई दिल्ली	डॉ पीयूष साहनी अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली
बायोइंफॉर्मेटिक्स पर नियो ट्रेण्ड्स तथा गणितीय परिप्रेक्ष्य में इसके मॉडेल्स पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	21–22 सितम्बर, 2017 तिरुचेंगोड	डॉ एस. गुनाशेखरन के. एस. आर. कॉलेज ऑफ ऑर्ट्स ऐण्ड साइंस फॉर वीमेन तिरुचेंगोड नामक्कल (तमिल नाडु)
सशस्त्र बलों में तनाव प्रबंधन–हम कहॉ हैं? पर सी एम ई CHNC 2017	22–23 सितम्बर, 2017 उद्यमपुर	कर्नल जे. गंभीर कमाण्ड हॉस्पिटल उद्यमपुर (जम्मू ऐण्ड कश्मीर)
मच्छरों से उत्पन्न रोगों में औषध विकास और अनुसंधान पर सम्मेलन	22–23 सितम्बर, 2017 पलक्काड	श्री कार्तिकेयन एम. अहिल्या स्कूल ऑफ फार्मेसी पलक्काड (केरल)
प्रोस्थेटिक्स और ऑर्थोटिक्स में CAD/CAM प्रौद्योगिकी की भूमिका पर सेमिनार	23 सितम्बर, 2017 करुर	डॉ पी. गोमती एन. एस. एन. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी करुर (तमिल नाडु)

किशोरवय लड़कियों में गर्भाशय की फाइब्रोसिस और बंध्यता निवारण की जागरूकता पर सेमिनार	26–27 सितम्बर, 2017 कोइम्बटूर	डॉ पी. मनिमेंगलाई करपागम एकेडमी ऑफ हायर एजूकेशन कोइम्बटूर
भारत में उभरते ग्रामीण स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर सम्मेलन	26–27 सितम्बर, 2017 मैसूर	डॉ दिनेशा पी. टी. सेंटर फॉर दि स्टडी ऑफ सोशल एक्सक्लूजन ऐण्ड इंक्ल्यूसिव पॉलिसी यूनीवर्सिटी ऑफ मैसूर
संचार विकारों की शुरुआती पहचान और हस्तक्षेप : प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की भूमिका पर सेमिनार	27 सितम्बर, 2017 धारवाड़	श्री सबरिश ए. जे एस एस इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच ऐण्ड हियरिंग धारवाड़ (कर्नाटक)
पोषण और खाद्य सुरक्षा पर सम्मेलन एवं पुरस्कार	27–28 सितम्बर, 2017 नई दिल्ली	डॉ ओम एस. त्यागी ASSOCHAM नई दिल्ली
चिकित्सा इमेज विश्लेषण का उपयोग कर शुरुआती ब्रेन स्ट्रोक का पता लगाने पर सेमिनार	5 अक्टूबर, 2017 कोइम्बटूर	डॉ सेनोज जोसेफ श्री कृष्णा कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी कोइम्बटूर
नैदानिक प्रैक्टिस और अनुसंधान में फ्लोसाइटोमीट्री पर कार्यशाला	5–7 अक्टूबर, 2017 पटना	डॉ अजित के सक्सेना अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान पटना (बिहार)
खाद्य और चिकित्साविज्ञान में नैनोप्रौद्योगिकी : सूक्ष्म विज्ञान में अवसर और चुनौतियों पर सेमिनार	6 अक्टूबर, 2017 पेरुनदुरई (इरोड)	डॉ ए. सुधा कोंगू इंजीनियरिंग कॉलेज पेरुनदुरई (इरोड) तमिल नाडु
IOT पर आधारित दिल के दौरे की चेतावनी प्रणाली पर एक डेमो के साथ मधुमेह के कारण दिल का दौरा पड़ने के बारे में जागरूकता पर कार्यशाला	6 अक्टूबर, 2017 चेन्नई	डॉ वी. सुबेघा पनीमालार इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी चेन्नई
भारतीय एड्स संस्था का 10 वां राष्ट्रीय सम्मेलन (ASICON-2017)	6–8 अक्टूबर, 2017 हैदराबाद (तेलंगाना)	डॉ आई. एस. गिलादा एड्स सोसाइटी ऑफ इंडिया यूनीसन मेडिकेयर ऐण्ड रिसर्च सेंटर मुम्बई
त्वचा और फेफड़ों के कैंसर जांच के लिए मेडिकल इमेजिंग प्रौद्योगिकियों में वर्तमान परिवर्तनों पर सेमिनार	6–7 अक्टूबर, 2017 कोइम्बटूर	डॉ एस. शांति KIT कलाइगनार करूणानिधि इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी कोइम्बटूर
शल्य क्रिया उपकरणों और जैवसिगनल प्रोसेसिंग में प्रगति पर सेमिनार	6–7 अक्टूबर, 2017 पुडुचेरी	डॉ वी. ड्रसलिन मर्सीबाई राजीव गांधी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी पुदुचेरी

एशियाई मास्टोलॉजी संस्था सम्मेलन 2017	7–9 अक्टूबर, 2017 नई दिल्ली	प्रो. वी. सीनू अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली
फार्मोकोविजिलेंस वर्तमान पहलुओं और भावी संभावनाओं पर सेमिनार	10 अक्टूबर, 2017 नाडियाड	डॉ. बी. एन. सुहागिया धर्मेश देसाई यूनीवर्सिटी नाडियाड (गुजरात)
स्वास्थ्य सुरक्षा और उनकी चुनौतियों में बड़े डेटा तकनीकों के प्रयोग पर सेमिनार	10–11 अक्टूबर, 2017 कोइम्बटूर	डॉ एम. सबरी गिरिराज एस वी एस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग कोइम्बटूर
द्वितीय IBRO/APRC चण्डीगढ़ तंत्रिका विज्ञान संगोष्ठी	12 अक्टूबर, 2017 चण्डीगढ़	डॉ अनुराग कुहद यूनीवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटीकल साइंसेज़ पंजाब यूनीवर्सिटी चण्डीगढ़
जेनेरिक औषधियों में गुणवत्ता मानकों को सुनिश्चित करने पर सम्मेलन	13 अक्टूबर, 2017 बैंगलोर	श्री अनुज माथुर ASSOCHAM नई दिल्ली
इंटरनेट ऑफ थिंग्सः स्वास्थ्य सुरक्षा में नए समाधान पर संगोष्ठी	13–14 अक्टूबर, 2017 तिरुचेंगोड, नामक्कल	डॉ के. बी. जयंती के. एस. रंगास्वामी कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी तिरुचेंगोड (नामक्कल) तमिल नाडु
बाल शल्य चिकित्सा में मिनिमल इनवेसिव शल्यक्रिया वर्तमान प्रवृत्ति और भावी संभावनाओं पर सी एम ई	14–15 अक्टूबर, 2017 दिल्ली कैंट	ले. कर्नल कमल किशोर आर्मी हॉस्पिटल आर ऐण्ड आर दिल्ली कैंट
आर्युवैदिकविज्ञान : वैदिक अवधि से नैनो युग की चुनौतियों अवसरों और कौशल पर राष्ट्रीय सम्मेलन	16–17 अक्टूबर, 2017 सतना	डॉ सूर्य प्रकाश गुप्ता ए के एस यूनिवर्सिटी सतना (मध्य प्रदेश)
अनुसंधान कार्य प्रणाली पर कार्यशाला	25–28 अक्टूबर, 2017 मदुरई	श्री सनिल जोसफ लॉयंस अरविन्द इंस्टीट्यूट ऑफ कम्युनिटी ऑफ्थैल्मोलॉजी मदुरई (तमिल नाडु)
MIMICS-3D प्रिंटिंग प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हुए इंप्लांट्स और प्रोस्थोसिस की रूपरेखा और निर्माण पर कार्यशाला	26–27 अक्टूबर, 2017 कोइम्बटूर	डॉ ए. रमेश श्री कृष्णा कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी कोइम्बटूर
इंटरनेट संसाधनों को एकीकृत करते हुए विष विज्ञान और औषधविज्ञान में कम्प्यूटेशनल विधियों पर 9वीं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (CMTPI-2017)	27–30 अक्टूबर, 2017 गोवा	डॉ सिसर नंदी ग्लोबल इंस्टीट्यूट ऑफ फॉर्मास्युटीकल एजुकेशन ऐण्ड रिसर्च (GIPER) काशीपुर (उत्तराखण्ड)

Acoustics-NSA-2017 पर 46वीं राष्ट्रीय संगोष्ठी	28–30 अक्टूबर, 2017 अलीगढ़	डॉ यासर राफत अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ (यू.पी.)
भारतीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी समाज का 35वां वार्षिक सम्मेलन	2–4 नवम्बर, 2017 लखनऊ	डॉ उत्तम सिंह संजय गांधी पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ लखनऊ (यू. पी.)
चिकित्सीय पेशेवरों में आत्मघात की घटनाएं : सामाजिक सामर्थ्य हॉर्मोनल असंतुलन अथवा तनाव का मिश्रण पर सेमिनार	3–4 नवम्बर, 2017 मुम्बई	प्रो. विल्मा वंलसालान हिन्दुजा कॉलेज ऑफ नर्सिंग, पी डी हिन्दुजा हॉस्पिटल ऐण्ड मेडिकल रिसर्च सेंटर मुम्बई
स्वास्थ्य और कृषि में प्रोटीन संरचना और गतिशीलता पर राष्ट्रीय सम्मेलन	3–4 नवम्बर, 2017 नई दिल्ली	डॉ एम. आई. हसन जामिया मिलिया इस्लामिया नई दिल्ली
अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन FIPSPHYSIOCON 2017	5–7 नवम्बर, 2017 दिल्ली	डॉ मधुसूदनपाल डिफेंस इंस्टीट्यूट ऑफ एलाइड साइंसेज (DIPAS) डिफेन्स रिसर्च ऐण्ड डेवेल्पमेंट ऑगनाइज़ेशन (DRDO) दिल्ली
उत्कृष्टता के लिए प्रयास : नर्सों में वैज्ञानिक लेखन एवं प्रकाशन एथिक्स को बढ़ावा देना	7–8 नवम्बर, 2017 गुवाहाटी	डॉ (श्रीमती) उनमोना बोरघेन एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग एजुकेशन गुवाहाटी (असम)
तेजी से बदलते भारतीय चिकित्सीय परीक्षण नियमनों और अर्बुदविज्ञानी अध्ययनों में चुनौतियों के प्रबंधन पर संगोष्ठी	9 नवम्बर, 2017 बेंगलुरु	प्रो. रमेश एस बिलीमागा इंडियन कैंसर कांग्रेस 2017 बेंगलुरु
मैटीरियल साइंस, जैवप्रौद्योगिकी और आयुर्विज्ञान समाभिरूपता (कंवर्जेंस) को दूर करती नैनोटेक्नोलॉजी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	9–11 नवम्बर, 2017 कोल्हापुर	डॉ अरविन्द गुल्बाके सेंटर फॉर इंटर डिसिप्लिनरी रिसर्च डी. वाई. पाटिल यूनिवर्सिटी कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
बाल नर्सिंग सुरक्षा में जानकारी का हस्तांतरण और नवाचार : भविष्य को आकार देने पर सम्मेलन	10 नवम्बर, 2017 कोइम्बटूर	सुश्री सुधा एम. कॉलेज ऑफ नर्सिंग श्री रामकृष्णा इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल साइंसेज़ कोइम्बटूर
भारतीय मूल के कार्यात्मक खाद्यों का न्युट्रीकाइनेटिक मूल्यांकन : उनके वैज्ञानिक एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य पर संगोष्ठी	10–11 नवम्बर, 2017 रॉकलैण्ड्स उधागामण्डलम्	डॉ एन. कृष्णा वेनी जे एस एस कॉलेज ऑफ फॉर्मेसी रॉकलैण्ड्स ऊटी (तमिल नाडु)
जैव आयुर्विज्ञान में प्रयोगों के लिए उन्नत पॉलीमर नैनोकम्पोज़िट्स पर सेमिनार	16–17 नवम्बर, 2017 पोलाची	श्री ए. अगाथीश्वरण पी. ए. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी पोलाची (तमिल नाडु)

17वां FERCAP अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और 5वां FERCI राष्ट्रीय सम्मेलन	20–22 नवम्बर, 2017 नई दिल्ली	प्रो. एस. के. मलिक अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली
यर्थाथ वास्तविकता और स्वास्थ्य सुरक्षा उद्योग में इसके प्रयोग पर कार्यशाला	24–25 नवम्बर, 2017 पेरुनदुरई	डॉ वी. वेंकटाचलम इरोड सेनगुंथर इंजीनियरिंग कॉलेज पेरुनदुरई (इरोड) तमिल नाडु
विकिरण संबंधी सुरक्षा और इमेजिंग तकनीकों पर कार्यशाला	25–26 नवम्बर, 2017 कोइम्बटूर	डॉ ए. सरवना कुमार पी एस जी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस रिसर्च ऐण्ड हॉस्पिटल कोइम्बटूर
सतत कृषि, पोषण और खाद्य सुरक्षा के लिए कृषि संबंद्ध विज्ञान और जैवप्रौद्योगिकी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	25–26 नवम्बर, 2017 वाराणसी	श्री रत्नेश कुमार राव महिमा रिसर्च फाउण्डेशन ऐण्ड सोशल वेल्फेयर, बी एच यू वाराणसी (यू पी)।
स्वास्थ्य सुरक्षा कार्यक्रमों के आर्थिक मूल्यांकन पर कार्यशाला	27–30 नवम्बर, 2017 गुड़गांव	श्री भौमिक रे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक हेल्थ दिल्ली गुड़गांव (हरियाणा)
स्वास्थ्य और रोग में प्रोटियोमिक्स पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	30 नवम्बर से 2 दिसम्बर, 2017 भुवनेश्वर	डॉ अनमोल आर. सूर्यवंशी इंस्टीट्यूट ऑफ लाइफ सांइस (DBT) भुवनेश्वर (ओडिशा)
राष्ट्रीय त्वचाविज्ञान सी एम ई बेस हॉस्पिटल लखनऊ	8–9 दिसम्बर, 2017 लखनऊ	ले. कर्नल (डॉ) विजेन्द्रन पी बेस हॉस्पिटल लखनऊ (यू.पी.)
बेहतर मानवीय कार्य और कार्य परिवेशः पर 15वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (HWWE 2017)।	8–10 दिसम्बर, 2017 अलीगढ़	डॉ एम. मुज़ामिल ज़ेड. एच. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ऐण्ड टेक्नोलॉजी अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी अलीगढ़ (यू. पी.)
भारतीय रक्ताधान और इम्यूनोहेमेटॉलॉजी समाज का 42वां राष्ट्रीय सम्मेलन (TRANSCON 2017) और सम्मेलन पूर्व कार्यशाला	8–10 दिसम्बर, 2017 कोटा	डॉ एच. एल. मीणा गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज कोटा (राजस्थान)
न्यूरोजीनोमिक्स और स्टेम सेल थिरैपी पर विश्व न्यूरो कांग्रेस 2017	9–10 दिसम्बर, 2017 अलीगढ़	डॉ मेहदी हयात शाही जे. एन. मेडिकल कॉलेज अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ (यू. पी.)
ब्रेन मोड्स 2017 – ए मल्टीमोडल ब्रेनः स्पेशियोटेम्पोरल नेटवर्क मेकेनिज़्म्स ऐण्ड मॉडेल्स पर कार्यशाला	11–14 दिसम्बर, 2017 मानेसर	डॉ अर्पण बनर्जी नेशनल ब्रेन रिसर्च सेंटर मानेसर गुड़गांव (हरियाणा)

IMMUNOCON 2017 भारतीय प्रतिरक्षाविज्ञान समाज (115) का 44वां वार्षिक सम्मेलन	13–15 दिसम्बर, 2017 अहमदाबाद	डॉ रीना अग्रवाल राजपूत स्कूल ऑफ बायोलॉजिकल साइंसेज ऐण्ड बायोटेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड रिसर्च (IIAR) गांधी नगर (गुजरात)
प्रयोगशाला के छोटे जंतुओं और नैतिक प्रैक्टिस पर अनुसंधान अध्ययनों पर कार्यशाला	14–16 दिसम्बर, 2017 श्रीपेरम्बुदूर	डॉ एस प्रभु श्री वेंक्टेश्वर कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग श्रीपेरम्बुदूर (तमिल नाडु)
टी बी और वक्ष रोगों का 72वां राष्ट्रीय सम्मेलन–NATCON 2017	15–17 दिसम्बर, 2017 अमलापुरम	डॉ बी, भार्गव प्रसाद KIMS मेडिकल कॉलेज अमलापुरम (आन्ध्र प्रदेश)
तंत्रिका संबंधी रोगों के लिए मॉडलिंग और औषध स्क्रीनिंग में वर्तमान प्रगति पर सेमिनार	16–17 दिसम्बर, 2017 भिलाई	डॉ कार्तिक नरवाटे रुंगटा कॉलेज ऑफ फार्मास्युटिकल साइंसेज़ ऐण्ड रिसर्च भिलाई (सी.जी.)
चिकित्सा उपकरणों और स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए साइबर सुरक्षा पर कार्यशाला	22–23 दिसम्बर, 2017 सत्यमंगलम् (इरोड)	डॉ पी थंगराज बन्नारी अम्मान इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी सत्यमंगलम् (इरोड) तमिल नाडु
स्वास्थ्य सुरक्षा में प्रयोगों के लिए ओरल फ्लूड बायोसेंसर्स में वर्तमान प्रगति पर सेमिनार	3–4 जनवरी, 2018 सलेम	डॉ आर. सगयराज ए वी एस इंजीनियरिंग कॉलेज सलेम (तमिल नाडु)
मोबाइल फोन विकिरण से प्रभावित होने और मानव पर उसके कुप्रभावों विषय के में जागरुकता पर सेमिनार	9–10 जनवरी, 2018 कोइम्बटूर	डॉ एस मेरी प्रावीना श्री राम कृष्णा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी कोइम्बटूर
पोषण अनुसंधान विधियों में अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम	15–26 जनवरी, 2018 बैंगलोर	डॉ रेबेका कुरियन राज सेंट जॉन्स मेडिकल कॉलेज ऐण्ड सेंट जॉन्स रिसर्च इंस्टीट्यूट बैंगलोर
स्वदेशी लोग, मानव सुरक्षा और सतत विकास : वर्तमान वैश्विक संदर्भ में उभरती चुनौतियों पर सम्मेलन	17–19 जनवरी, 2018 कोलकाता	प्रो. सुबीर बिस्वास वेस्ट बंगाल स्टेट यूनीवर्सिटी कोलकाता
भारतीय पर्यावरणीय म्युटाजेन सोसाइटी (EMSI) का 42वां वार्षिक सम्मेलन तथा पर्यावरणीय म्युटाजिनेसिस पर राष्ट्रीय सम्मेलन	25–27 जनवरी, 2018 मुम्बई	डॉ भवानी एस. शंकर BARC मुम्बई
परिवार नियोजन और सहायक प्रजनन प्रौद्योगिकी पर बल के साथ प्रजनन स्वास्थ्य पर विश्व कांग्रेस	23–25 फरवरी, 2018 हैदराबाद	डॉ रोया रोज़ाती ISSRF मैटर्नल हेल्थ ऐण्ड रिसर्च ट्रस्ट हैदराबाद
अर्बुदविज्ञान में अनुसंधान विधियों के विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर कार्यशाला (eReDO)	4–9 मार्च, 2018 लोनावला (महाराष्ट्र)	डॉ प्रिया रंगानाथन टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल मुम्बई

स्मृति शेष

डॉ नीरू सिंह
(1956–2017)

दिनांक 19 अगस्त, 2017 को जबलपुर स्थित राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान की तत्कालीन निदेशक डॉ नीरू सिंह के असामयिक निधन से भारत में मलेरिया और कीटजन्य रोगों पर अनुसंधान कार्य को एक भारी क्षति हुई है। वह एक सक्रिय वैज्ञानिक एवं एक कुशल मागदर्शक थीं जिन्होंने अपना जीवन मलेरिया के विभिन्न आयामों पर शोधकार्य को समर्पित किया था।

दिनांक 11 जुलाई, 1956 को कानपुर, उत्तर प्रदेश में जन्मी डॉ नीरू सिंह ने वर्ष 1976 में रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय से शरीरक्रियाविज्ञान और जीवरसायनविज्ञान में स्नातकोत्तर (एम. एससी) उपाधि प्राप्त की और तत्पश्चात वर्ष 1979 में रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय से पीएच डी की उपाधि प्राप्त की। कानपुर स्थित चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में पोस्ट डॉक्टरल फेलो (1980–82) और दिल्ली स्थित मलेरिया अनुसंधान केन्द्र में रिसर्च एसोसिएट (1983–84) के रूप में कार्य करने के पश्चात वर्ष 1984 में आई सी एम आर के जबलपुर स्थित क्षेत्रीय जनजातीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र में अनुसंधान अधिकारी का पदभार ग्रहण किया। वर्ष 1989 में वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी के रूप में प्रोन्नत होने के साथ–साथ मलेरिया अनुसंधान केन्द्र के जबलपुर स्थित फील्ड स्टेशन की प्रभारी–अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण करने के उपरान्त वर्ष 2007 तक मलेरिया अनुसंधान केन्द्र (अब राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान) में सेवा प्रदान की। वर्ष 2007 में जबलपुर स्थित क्षेत्रीय जनजाति आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र (जिसे अब राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान का नाम दिया गया है) की निदेशक का पदभार ग्रहण किया।

डॉ सिंह का शोध कार्य मलेरिया के सामुदायिक और प्रयोगशाला दोनों ही पहलुओं पर केन्द्रित था, वह जनजातीय क्षेत्रों में दौरे के प्रति अत्यंत उत्सुक रहती थीं और फील्ड की गतिविधियों में अत्यन्त उत्साह के साथ भाग लेती थीं। दूसरी ओर उन्होंने मलेरिया के लिए जिम्मेदार कीटों (वेक्टर्स) और परजीवियों (पैरासाइट्स) पर आण्विक अध्ययनों की शुरुआत करने और मलेरिया रोगियों में बायोमार्कर अध्ययनों के साथ मलेरिया अध्ययनों की प्रयोगशालाओं को सुदृढ़ भी बनाया। भारत में उनकी पहचान गर्भावस्था के दौरान मलेरिया पर पथप्रदर्शक के रूप में हुई थी। जनजातीय क्षेत्रों में त्वरित नैदानिक परीक्षणों के प्रयोग पर उनके प्रमाण आधारित अध्ययनों से मलेरिया के निदान के लिए त्वरित नैदानिक परीक्षणों को राष्ट्रीय कार्यक्रम में शामिल कराने में सहायता मिली है।

उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था, जिनमें प्रमुख थे – वेक्टर बायोनॉमिक्स के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य के लिए वेस्टरगार्ड फैंडसेन पुरस्कार (2017), भारतीय फार्मेकोलॉजिकल सोसायटी का लाहिरी व्याख्यान पुरस्कार (2015), अल्पविकसित क्षेत्रों में जैवआयुर्विज्ञानी अनुसंधान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए आई सी एम आर पुरस्कार आदि। वे मलेरिया और जनजातीय स्वास्थ्य पर अनेक महत्वपूर्ण समितियों की सक्रिय सदस्य भी थीं यथा – HRP2 और HRP3 जीन डिलीशन पर विशेषज्ञ समिति (विश्व स्वास्थ्य संगठन, जेनेवा); मलेरिया उन्मूलन पर नीतिगत सलाहकार दल (विश्व स्वास्थ्य संगठन, जेनेवा); सिकिल सेल एनीमिया पर कार्यकारी समिति (जैवप्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली), मलेरिया पर तकनीकी कार्यकारी दल (एन आई एच, सं रा. अ.); विश्व स्वास्थ्य संगठन के दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्रीय संगठन का क्षेत्रीय तकनीकी सलाहकार दल। वे नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज़ इंडिया की फेलो भी थीं।

अपने 32 वर्ष के कैरियर में उन्होंने उच्च इंपैक्ट फैक्टर वाले राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जर्नल्स में 160 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए। वे अनेक निकायों और सोसाइटीज़ की सम्मानित सदस्य थीं, जिनमें प्रमुख हैं : *इंडियन सोसाइटी फॉर मलेरिया ऐण्ड अदर कम्यूनीकेबल डिसीज़ेज, नेशनल एकेडमी ऑफ वेक्टर बोर्न डिसीज़ेज़, दि इंडियन सोसाइटी फॉर पैरासीटोलॉजी, नेशनल एनवाइरॉनमेंटल साइंस एकेडमी और इंडियन साइंस कांग्रेस।* विश्व स्वास्थ्य संगठन, एन आई एच (सं. रा. अ.), एम ए एस आई, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और कई अन्य शासी निकायों से उनकी संबद्धता के परिणामस्वरूप उन्हें संयुक्त राज्य अमरीका, संयुक्त गणराज्य, यूरोप, एशिया तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों जैसे विभिन्न देशों का दौरा करने का अवसर प्राप्त हुआ जहां उनके शोध कार्य की अत्यंत सराहना की गई।

उन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से वित्तीय सहायता प्राप्त 20 से अधिक अति महत्वपूर्ण परियोजनाओं का मार्गदर्शन किया। उन्होंने विषाणुविज्ञान पर शोध कार्य की शुरुआत करके, हीमोग्लोबिनोपैथीज़ पर कार्य को आगे बढ़ाया तथा इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाकर इस संस्थान को सुदृढ़ बनाया। संस्थान में उनके नेतृत्वकारी गुणों के आधार पर क्षेत्रीय केन्द्र को एक राष्ट्रीय संस्थान के रूप में विकसित होने का अवसर प्राप्त हो सका।

डॉ नीरू सिंह के निधन से हम लोगों ने एक परिश्रमी अधिकारी, सुविख्यात मलेरियाविद को खो दिया है जिन्होंने अपनी आखिरी सांस तक कार्य किया। डॉ नीरू सिंह आने वाले वर्षों में मलेरिया और कीटजन्य रोगों के क्षेत्र में कार्यरत सभी के लिए निरन्तर प्रेरणास्रोत रहेंगी।

डॉ अपरूप दास
निदेशक, राष्ट्रीय जनजाति स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

आई सी एम आर पुरस्कार एवं पारितोषिक 2017

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद जैव चिकित्साविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के लिए वर्ष 2017 हेतु आई सी एम आर पुरस्कार एवं पारितोषिक के लिए भारतीय वैज्ञानिकों से नामांकन/आवेदन पत्र आमंत्रित करता है। कृपया विस्तृत विवरण और आवेदन प्रपत्र के लिए परिषद की वेबसाइट : http:www.icmr.nic.in देखें। नामांकन/आवेदन की अंतिम तिथि 31 जनवरी, 2018 है।

पत्राचार का पता : महानिदेशक, ध्यानाकर्षण : डॉ. एन. सी. जैन, वैज्ञानिक जी एवं प्रभाग प्रमुख, मानव संसाधन विकास प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, वी. रामलिंगास्वामी भवन, अंसारी नगर, पोस्ट बॉक्स– 4911, नई दिल्ली–110029, टेलीफोन : 011–26589258 ईमेलः drencejain@gmail.com

आई सी एम आर के प्रकाशनों की सूची इसकी वेवसाइट www.icmr.nic.in पर उपलब्ध है। आई सी एम आर के प्रकाशन प्राप्त करने के लिए महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के नाम से बैंक ड्राफ्ट अथवा पोस्टल ऑर्डर भेजें। डाक व्यय अलग होगा। चेक अथवा मनीऑर्डर स्वीकार नहीं किए जाएंगे। इस संबंध में और अधिक जानकारी के लिए प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, पोस्ट बॉक्स 4911, अंसारी नगर, नई दिल्ली - 110029 से सम्पर्क करें।
दूरभाष : 91-11-26588895, 91-11-26588980, 91-11-26589794, 91-11-26589336, 91-11-26588707, (एक्स्टेंशन-228),
फैक्स -91-11-26588662 ई मेल : headquarters@icmr.org.in, icmrhqds@sansad.nic.in
सम्पर्क व्यक्ति : डॉ नीरज टण्डन, वैज्ञानिक 'जी' एवं
प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना

आई सी एम आर पत्रिका भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87